प्रार्थना

श्लोक १

दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिमाप्नुयात्।
शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत्॥

जो मनुष्य दुर्जन हैं, वे सज्जन बनें। सज्जन मनुष्यों को शान्ति प्राप्त हो।
शान्त मनुष्य बन्धन से मुक्त हों और
जो मुक्त हैं, वे अन्य जनों को मुक्त करें।

श्लोक २

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां
न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु॥

प्रजाओं का कल्याण हो
और राजा अथवा नेतागण न्याय के मार्ग से
पृथ्वी का पालन करें।
गौओं एवं ब्राह्मणों का नित्य मंगल हो।
सभी लोग सुखी हों।

श्लोक ३

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी शस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः॥

समय पर वर्षा हो, पृथ्वी धन-धान्य से पूर्ण हो, देश किसी भी प्रकार के उद्वेग से रहित हो और ब्राह्मण-समुदाय भयरहित बने।

श्लोक ४

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों, सभी लोग सर्वत्र कल्याण को देखें, किसी को भी कभी दुःख न हो।

श्लोक ५

सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्वः कामानवाप्नोतु सर्वः सर्वत्र नन्दतु॥

सभी दुर्ग की तरह खड़ी बाधाओं को पार कर लें, सभी मंगल को देखें। सभी की कामनाएँ परिपूर्ण हों, सभी सर्वत्र आनन्द प्राप्त करें।

श्लोक ६

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु
स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः।
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु
ज्योगेव दृशेम सूर्यम्॥

हमारे माता और पिता का कल्याण हो, गायों का कल्याण हो,
समस्त भूमि का और जगत के सभी मनुष्यों का मंगल हो।
हमारा यह विश्व समृद्धि से परिपूर्ण हो और ज्ञान के लिए सहायक हो।
हम दीर्घकाल तक सूर्य के दर्शन करें।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।